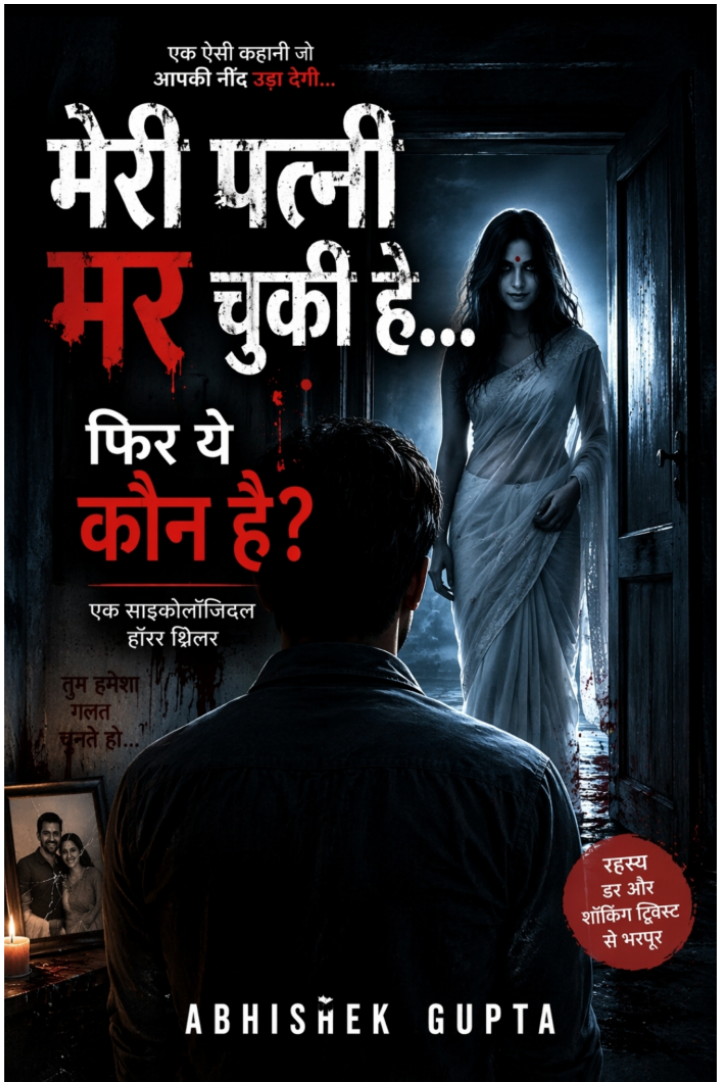
एक ऐसी कहानी जो
आपकी नींद उड़ा देगी...
मेरी पत्नी
मर चुकी है...
फिर ये
कौन है?
एक साइकोलॉजिदल
हॉरर थ्रिलर
तुम हमेशा
गलत
सुनते हो...
रहस्य
डर और
शॉकिंग ट्विस्ट
से भरपूर
ABHISHEK GUPTA

# मेरी पत्नी मर चुकी है... फिर ये कौन है?

भाग 1 – मौत के बाद की दस्तक
बारिश उस रात भी हो रही थी...
वैसी ही बारिश, जैसी उस दिन हुई थी जब रिया मरी थी।
तेरह दिन बीत चुके थे।
तेरह लंबे, टूटे हुए, सन्नाटे से भरे दिन।
घर में अगर कोई चीज़ सबसे ज़्यादा बची थी, तो वो थी उसकी खुशबू... और मेरी चीखें, जो हर रात गले में फँसकर रह जाती थीं।
मेरा नाम अभय है।
उम्र बत्तीस।
और मैंने अपनी पत्नी को अपनी आँखों के सामने मरते देखा था।
कम से कम... मुझे यही याद था।
रिया और मेरी शादी को सिर्फ दो साल हुए थे।
हमारा रिश्ता परफेक्ट नहीं था, लेकिन इतना बुरा भी नहीं कि मौत तक पहुँच जाए।
उस दिन हम कार में थे।
भयंकर बारिश।
सड़क फिसलन भरी।
रिया चुप थी।
मैं गुस्से में था।
क्योंकि मैंने उसके फोन में कुछ देखा था।
किसी अनजान नंबर से आए मैसेज।
“आज रात वही समय... मैं इंतज़ार करूँगा.”
मैंने उससे पूछा था।
उसने जवाब नहीं दिया।
मैंने फिर पूछा।
वो फिर चुप रही।
फिर मेरी आवाज़ ऊँची हुई।
फिर उसकी।
फिर...
एक ट्रक सामने आया।
ब्रेक।
चीख।
काँच टूटने की आवाज़।
और फिर...
खून।
बहुत सारा खून।

रिया मेरी गोद में थी।
उसकी आँखें खुली थीं… मगर उनमें मैं नहीं था।
बस खालीपन था।
पुलिस आई।
एम्बुलेंस आई।
पोस्टमार्टम हुआ।
डेथ सर्टिफिकेट बना।
अंतिम संस्कार हुआ।
मैंने अपनी पत्नी को चिता पर जलते देखा था।
उसके चेहरे पर आखिरी बार सफेद कपड़ा मैंने रखा था।
उसकी राख मैंने अपनी हथेलियों से उठाई थी।
तो अगर कोई मुझसे पूछता—
“क्या तुम्हारी पत्नी सच में मर चुकी है?”
तो मैं कसम खाकर कहता—
हाँ।
तेरहवें दिन के बाद पहली रात थी…
जब मैंने शराब नहीं पी।
मैंने सोचा था, शायद आज नींद आ जाए।
घर अजीब तरह से शांत था।
घड़ी की टिक-टिक इतनी तेज़ लग रही थी जैसे कोई दीवार के पीछे हथौड़ा चला रहा हो।
रात के 11:47 बजे थे।
मैं सोफे पर बैठा था।
टीवी बंद।
लाइट आधी।
तभी—
टिंग टॉन्ग।
डोरबेल बजी।
मैं चौंक गया।
इस वक्त?
मेरे घर कोई नहीं आता था।
रिया के मरने के बाद तो बिल्कुल नहीं।
मैं धीरे-धीरे उठा।
दिल तेज़ धड़क रहा था।
दरवाज़े तक गया।
पीपहोल से बाहर देखा।
और मेरी साँस रुक गई।
बाहर…
रिया खड़ी थी।
लाल साड़ी में।
वही साड़ी जो उसने हमारी पहली सालगिरह पर पहनी थी।

बाल खुले।
चेहरा हल्का भीगा हुआ।
होंठों पर मुस्कान।
जैसे कुछ हुआ ही न हो।
जैसे वो तेरह दिन पहले मरी ही न हो।
मेरे हाथ काँपने लगे।
मैं पीछे हट गया।
“नहीं...”
मेरे मुँह से बस इतना निकला।
फिर डोरबेल दोबारा बजी।
टिंग टॉन्ग।
फिर उसकी आवाज़ आई।
धीमी।
मीठी।
पहचानी हुई।
“अभय... इतनी जल्दी भूल गए?”
मेरे पैरों से जान निकल गई।
मैंने दीवार पकड़ ली।
ये सपना था।
हैलुसिनेशन था।
शराब का असर।
दिमाग़ का खेल।
कुछ भी... पर वो नहीं हो सकती थी।
क्योंकि मैंने उसे जलते देखा था।
“अभय...”
इस बार आवाज़ थोड़ी ठंडी थी।
“दरवाज़ा खोलो।”
मैंने हिम्मत करके पूछा—
“त... तुम कौन हो?”
कुछ सेकंड चुप्पी रही।
फिर बाहर से हँसी आई।
वही हँसी... जो रिया गुस्सा होने पर दबाकर हँसती थी।
“अच्छा... अब मज़ाक करोगे?”
मेरी आँखों में आँसू आ गए।
“रिया...?”
“हाँ जान।”
“तुम... मर गई थीं...”
बाहर कुछ सेकंड खामोशी रही।
फिर बहुत धीरे से उसने कहा—
“नहीं अभय... मर तो तुम गए थे।”

मेरे हाथ से दरवाज़े की चाबी गिर गई।
दिमाग़ सुन्न।
कानों में सीटी जैसी आवाज़।
मैंने तुरंत दरवाज़ा नहीं खोला।
पीछे हट गया।
फोन उठाया।
पुलिस को कॉल लगाया।
नेटवर्क नहीं।
दुबारा।
नो सिग्नल।
तीसरी बार।
फोन अपने आप बंद हो गया।
बैटरी 72% थी।
अब स्क्रीन ब्लैक।
तभी किचन से आवाज़ आई।
काँच टूटने की।
मैं भागकर अंदर गया।
खिड़की खुली हुई थी।
बारिश अंदर आ रही थी।
और फ्रिज पर उँगली से लिखा था—
“मैं अंदर आ चुकी हूँ।”
मैं जड़ हो गया।
पीछे बेडरूम का दरवाज़ा धीरे-धीरे बंद हुआ।
ठक।
फिर अंदर से रिया की आवाज़ आई—
“अभय… तुमने मेरा कमरा किसी को दिया तो नहीं?”
मेरे गले से आवाज़ नहीं निकली।
मैंने धीरे-धीरे बेडरूम का हैंडल पकड़ा।
हाथ काँप रहा था।
दरवाज़ा खोला।
कमरा खाली था।
पर बिस्तर पर कोई बैठा था…
गद्दा दबा हुआ था।
जैसे कोई अदृश्य इंसान बैठा हो।
और तकिये पर रिया के लंबे बाल पड़े थे।
ताज़ा… भीगे हुए।
अचानक पीछे से किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा।
बर्फ जैसा ठंडा।
मैं पलटा—
और सामने रिया खड़ी थी।

इतनी पास कि उसकी साँस मेरे चेहरे से टकरा रही थी।
उसकी आँखें वही थीं…
लेकिन उनमें कुछ था।
कुछ अँधेरा।
कुछ ऐसा… जो मेरी पत्नी कभी नहीं थी।
वो मुस्कुराई।
धीरे से बोली—
“मैं वापस आ गई हूँ… लेकिन इस बार अकेली नहीं।”

भाग 2 – जो मरा था, वो कौन था?
रिया मेरे सामने खड़ी थी।
भीगी हुई।
मुस्कुराती हुई।
जिंदा।
या… कम से कम दिखने में जिंदा।
मेरे कंधे पर उसका हाथ अभी भी रखा था।
इतना ठंडा… जैसे बर्फ में डुबोकर निकाला गया हो।
मैं पीछे हट गया।
दिल इतनी तेज़ धड़क रहा था कि लगा अभी छाती फाड़कर बाहर निकल जाएगा।
“तुम… तुम कौन हो?”
उसने आँखें छोटी कीं।
“अच्छा… अभी भी यही सवाल?”
“रिया मर चुकी है!”
वो धीरे से हँसी।
फिर मेरे घर के अंदर चारों तरफ नज़र घुमाई।
“घर की हालत देखो… सिर्फ तेरह दिन में ऐसे टूट गए?”
मैंने दीवार पकड़ ली।
ये आवाज़।
ये चाल।
ये हावभाव।
सब रिया जैसा था।
लेकिन कुछ गड़बड़ था।
बहुत गड़बड़।
“दूर रहो!” मैंने चिल्लाकर कहा।
उसने दोनों हाथ ऊपर किए।

“ठीक है... शांत हो जाओ।”
फिर अचानक उसकी नज़र मेरी दीवार पर लगी रिया की फोटो पर गई।
फोटो पर माला चढ़ी थी।
मोमबत्ती बुझ चुकी थी।
उसने धीरे-धीरे फोटो के पास जाकर माला उतारी।
फिर मेरी तरफ देखा।
उसकी मुस्कान गायब हो चुकी थी।
“मेरी फोटो पर माला क्यों है?”
मैं काँपते हुए बोला—
“क्योंकि... तुम्हारी मौत हो चुकी है।”
रिया ने कुछ सेकंड मुझे देखा।
फिर बहुत धीमी आवाज़ में कहा—
“नहीं अभय... मौत मेरी नहीं हुई थी।”
मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई।
“झूठ!”
मैंने पास रखी फूलदान उठाकर उसकी तरफ फेंकी।
वो एकदम झुकी।
फूलदान पीछे शीशे पर जाकर टूटा।
रिया ने गहरी साँस ली।
“तुम्हारा गुस्सा अभी भी वही है।”
“निकल जाओ मेरे घर से!”
“ये घर मेरा भी है।”
“तुम रिया नहीं हो!”
वो अचानक मेरे बिलकुल सामने आ गई।
इतनी तेज़ कि मैं समझ ही नहीं पाया।
उसने मेरे कान के पास फुसफुसाकर कहा—
“अगर मैं रिया नहीं... तो तुम्हारी पत्नी कहाँ है?”
मैं जम गया।
उसने मेरे गाल पर हाथ फेरा।
बर्फ जैसा ठंडा।
फिर मुस्कुराई।
“सो जाओ अभय। सुबह बहुत कुछ याद आएगा।”
मैंने उसे धक्का दिया और दरवाज़े की तरफ भागा।
मुख्य दरवाज़ा बंद था।
अंदर से नहीं।
बाहर से।
मैंने पूरी ताकत से खींचा।
नहीं खुला।
पीछे से रिया की आवाज़ आई—
“भागकर कहाँ जाओगे?”

मैंने खिड़की खोली और नीचे कूदने का सोचा।
तीसरी मंज़िल थी।
नीचे अंधेरा।
बारिश।
मौत।
तभी नीचे सड़क पर मुझे कुछ दिखा।
मैंने आँखें मलीं।
नीचे...
सड़क पर...
मैं खुद खड़ा था।
भीगा हुआ।
ऊपर मेरी खिड़की की तरफ देख रहा था।
और मुस्कुरा रहा था।
मैं चीख पड़ा।
पीछे मुड़ा—
रिया गायब थी।
पूरा घर खाली।
बस घड़ी की टिक-टिक।
मैं भागकर बाथरूम गया।
चेहरे पर पानी मारा।
शीशे में देखा—
और मेरी चीख निकल गई।
शीशे में मेरा चेहरा नहीं था।
वहाँ एक जला हुआ चेहरा था।
आधा पिघला हुआ।
आँखें सफेद।
होंठ जले हुए।
मैं पीछे गिर पड़ा।
जब दोबारा देखा...
मेरा ही चेहरा था।
सुबह दरवाज़ा अपने आप खुला मिला।
मैं भागकर नीचे गया।
सीधे सामने वाले शर्मा जी मिले।
उन्होंने मुझे देखकर अजीब नज़र से देखा।
“कैसे हो बेटा?”
मैंने हाँफते हुए पूछा—
“शर्मा जी... रिया कल रात घर आई थी!”
वो कुछ सेकंड चुप रहे।
फिर बोले—
“रिया? वो तो रोज़ आती है।”

“क्या?!”
“तुम्हारे जाने के बाद से।”
मेरे कान सुन्न हो गए।
“मेरे जाने के बाद?”
“हाँ… तेरह दिन पहले तुम्हारा एक्सीडेंट हुआ था ना।”
मैंने उनका कॉलर पकड़ लिया।
“मरा कौन था?!”
शर्मा जी डर गए।
“अ… अभय बेटा… मर तो तुम गए थे…”
मैंने उन्हें छोड़ दिया।
पीछे हट गया।
साँस रुकने लगी।
“नहीं… नहीं…”
मैं भागकर मेडिकल स्टोर पहुँचा।
अखबार स्टैंड पर आज का अखबार रखा था।
फ्रंट पेज पर नहीं…
लेकिन शहर खबरों में एक छोटी सी खबर थी।
“13 दिन पहले सड़क हादसे में युवक अभय मेहरा की मौत।”
नीचे मेरी फोटो छपी थी।
मैंने अखबार गिरा दिया।
तभी पीछे से रिया की आवाज़ आई—
“अब यकीन आया?”
मैं धीरे-धीरे पलटा।
रिया छतरी लिए खड़ी थी।
आज वो सामान्य लग रही थी।
जैसे कुछ हुआ ही न हो।
वो आगे बढ़ी।
मेरे हाथ में अखबार रखा।
फिर बोली—
“तुम्हें सच का आधा हिस्सा याद है।”
“बाकी आधा?”
उसकी आँखें अचानक ठंडी हो गईं।
“बाकी आधा… तुमने मुझे मारा था।”
मैं पीछे हट गया।
“झूठ!”
रिया मुस्कुराई।
“तो फिर आज रात 12 बजे स्टोर रूम खोलना…”
“वहीं जहाँ तुमने मुझे छुपाया था।”
वो मुड़ी और भीड़ में गायब हो गई।
मैं वहीं खड़ा रह गया…

हाथ में अखबार…
जिसमें मेरी मौत छपी थी।
और दिमाग़ में एक सवाल जल रहा था—
अगर मैं मर चुका हूँ… तो स्टोर रूम में कौन है?

भाग 3 – स्टोर रूम के अंदर कौन साँस ले रहा है?
पूरा दिन मैं सड़क पर भटकता रहा।
लोग मुझे देख रहे थे…
या शायद नहीं देख रहे थे।
अब मुझे खुद पर भरोसा नहीं रहा था।
सुबह अखबार में मेरी मौत छपी थी।
पड़ोसी कह रहे थे मैं मर चुका हूँ।
रिया कह रही थी मैंने उसे मारा था।
और आज रात 12 बजे मुझे स्टोर रूम खोलना था…
वो स्टोर रूम, जिसे मैंने पिछले दो साल में कभी इस्तेमाल ही नहीं किया।
या… मुझे ऐसा याद था।
शाम तक मैं घर लौटा।
दरवाज़ा खुला था।
अंदर हल्की रोशनी।
किचन से बर्तनों की आवाज़।
मैं धीरे-धीरे अंदर गया।
रिया गैस पर चाय बना रही थी।
जैसे एक सामान्य पत्नी बनाती है।
उसने पीछे देखे बिना कहा—
“आ गए?”
मैं कुछ सेकंड उसे घूरता रहा।
“तुम हो कौन?”
उसने कप में चाय डाली।
“ये सवाल बार-बार मत पूछा करो। जवाब सुन नहीं पाओगे।”
“मैं मर चुका हूँ?”
“कुछ हिस्से।”
“मैंने तुम्हें मारा?”
रिया ने पहली बार मेरी तरफ देखा।

उसकी आँखों में गुस्सा था।
दर्द भी।
“तुमने सिर्फ मुझे नहीं मारा…”
वो रुक गई।
फिर मुस्कुराई।
“रात होने दो।”
मैंने चाय नहीं पी।
मुझे डर था उसमें कुछ मिला न हो।
रिया हँसी।
“तुम्हें अब भी ज़हर से डर लगता है?”
“मतलब?”
“कुछ नहीं।”
रात के 11:47 बजे।
घर की सारी लाइट अपने आप बंद हो गईं।
सिर्फ स्टोर रूम के नीचे से हल्की पीली रोशनी बाहर आ रही थी।
मेरी रीढ़ में ठंड उतर गई।
मैंने रिया की तरफ देखा।
वो सोफे पर बैठी थी।
पूरी तरह शांत।
“जाओ,” उसने कहा।
“वक्त हो गया।”
“तुम साथ चलो।”
“नहीं।”
“क्यों?”
उसने बिना पलक झपकाए कहा—
“क्योंकि अंदर मैं पहले से हूँ।”
मेरे पैर जम गए।
“क्या?”
वो मुस्कुराई।
“दरवाज़ा खोलो।”
स्टोर रूम घर के सबसे पीछे था।
हमेशा बंद।
पुराना लकड़ी का दरवाज़ा।
ऊपर जंग लगा ताला।
लेकिन आज ताला खुला हुआ था।
हवा में अजीब बदबू थी।
सीलन…
खून…
और किसी सड़ी चीज़ की।
मैंने हैंडल पकड़ा।

हाथ काँप रहे थे।
पीछे मुड़कर देखा—
रिया वहीं सोफे पर बैठी थी।
मगर अब उसकी आँखें पूरी काली थीं।
“खोलो, अभय।”
मैंने दरवाज़ा धक्का दिया।
चर्ररर...
अंदर अंधेरा था।
एक बल्ब टिमटिमा रहा था।
कमरा छोटा था।
पुराने डिब्बे।
टूटी कुर्सी।
लोहे की अलमारी।
और कोने में...
एक बड़ा लकड़ी का ट्रंक।
जिस पर जंजीर बंधी थी।
और ट्रंक के अंदर से आवाज़ आ रही थी।
साँसों की आवाज़।
धीमी।
घुटी हुई।
जैसे कोई महीनों से अंदर बंद हो।
मैं जड़ हो गया।
“क... कौन है?”
अंदर से तीन बार ठक-ठक हुई।
ठक।
ठक।
ठक।
फिर बहुत धीमी औरत की आवाज़—
“अभय...”
मेरे शरीर का खून जम गया।
वो आवाज़...
रिया की थी।
मैं पीछे हटने लगा।
तभी पीछे से दरवाज़ा बंद हो गया।
धड़ाम!
मैं पलटा।
दरवाज़ा अपने आप लॉक।
बाहर से रिया की आवाज़ आई—
“अब सच देखो।”
ट्रंक हिलने लगा।

जंजीर खड़खड़ाने लगी।
अंदर से तेज़ साँसें।
फिर नाखूनों की घिसने की आवाज़।
मैं काँपते हुए आगे बढ़ा।
जंजीर खोली।
हाथ काँप रहे थे।
ढक्कन उठाया—
और मेरी चीख निकल गई।
अंदर...
रिया थी।
कमज़ोर।
दुबली।
चेहरे पर चोट के निशान।
होंठ सूखे हुए।
आँखें आँसुओं से भरी।
ज़िंदा।
“बचाओ...” उसने फुसफुसाया।
मैं पीछे गिर पड़ा।
“न... नहीं... तुम तो बाहर हो...”
अंदर वाली रिया रोने लगी।
“वो मैं नहीं है...”
“फिर कौन है?!”
रिया ने काँपते हुए कहा—
“तुम्हारी यादों में रहने वाली चीज़...”
मेरे सिर में तेज़ दर्द उठा।
अचानक फ्लैशबैक चमका।
बारिश वाली रात।
कार।
रिया चिल्ला रही थी—
“मत पीओ और ड्राइव मत करो!”
मेरे हाथ में शराब की बोतल।
मैं नशे में था।
मैंने उसे थप्पड़ मारा।
कार डगमगाई।
टक्कर हुई।
रिया जिंदा थी।
रो रही थी।
मदद माँग रही थी।
और मैं...
मैं उसे घसीटकर घर लाया था।

स्टोर रूम में बंद किया था।
क्योंकि मुझे जेल का डर था।
मैं चीख पड़ा।
“नहीं!”
अंदर वाली रिया रोते हुए बोली—
“तुमने मुझे 13 दिन से बंद किया है…”
“मैं… मैं…”
“और बाहर जो है…”
उसकी आँखें डर से फैल गईं।
“वो हर रात मजबूत हो रही है।”
तभी कमरे का बल्ब फूटा।
पूरा कमरा अंधेरा।
फिर बाहर से कदमों की आवाज़ आई।
धीरे…
धीरे…
दरवाज़े के ठीक सामने आकर रुक गई।
और बाहर से वही आवाज़ आई—
रिया की।
लेकिन इस बार बहुत भारी।
बहुत गहरी।
बहुत अँधेरी।
“अभय… मेरी जगह किसे बचाओगे?”
ट्रंक के अंदर वाली रिया मेरे पैरों से लिपट गई।
“मुझे बाहर ले चलो!”
दरवाज़े के बाहर वाली चीज़ हँसी।
“सोच लो…”
“एक पत्नी ज़िंदा है…”
“दूसरी तुम्हें ज़िंदा नहीं छोड़ेगी।”
मैं बीच कमरे में खड़ा था…
एक तरफ असली रिया।
दूसरी तरफ वो चीज़…
जो मेरे घर में मेरे साथ रह रही थी।
और मुझे फैसला करना था।
किसे खोलूँ… किसे छोड़ूँ।

भाग 4 – गलत पत्नी
स्टोर रूम में अँधेरा धड़क रहा था।
हाँ… धड़क रहा था।
जैसे दीवारों के अंदर कोई दिल धड़क रहा हो।
मेरे पैरों से लिपटी ट्रंक वाली रिया काँप रही थी।
उसके नाखून मेरी पैंट में धँसे थे।
उसकी साँस टूटी हुई थी।
आँखें विनती कर रही थीं।
“अभय… मुझे यहाँ से निकालो…”
दरवाज़े के बाहर खड़ी दूसरी आवाज़ हँसी।
धीमी।
लंबी।
कानों में चुभती हुई।
“सोचकर चुनो…”
“जिसे बचाओगे… वही तुम्हारी किस्मत लिखेगी।”
मेरा दिमाग़ फट रहा था।
अगर ट्रंक वाली असली थी…
तो बाहर कौन थी?
अगर बाहर वाली असली थी…
तो ट्रंक में कौन था?
मैंने काँपते हुए पूछा—
“तुम दोनों में असली कौन है?”
ट्रंक वाली रिया रो पड़ी।
“मैं हूँ…”
बाहर वाली तुरंत बोली—
“झूठ।”
फिर उसने धीरे से कहा—
“अभय… याद है हमारी पहली मुलाक़ात कहाँ हुई थी?”
मैं जम गया।
कॉलेज लाइब्रेरी।
मैंने कुछ नहीं कहा।
बाहर वाली मुस्कुराई।
“दूसरी मंज़िल… आखिरी टेबल… तुमने मेरी किताब छुपाई थी।”
मेरा दिल बैठ गया।
ये बात सिर्फ हम दोनों जानते थे।
मैंने ट्रंक वाली की तरफ देखा।
“बताओ!”
वो हाँफती रही।
“मुझे… याद नहीं…”
मेरी सांसें तेज़ हो गईं।

बाहर वाली फिर बोली—
“याद है शादी की पहली रात तुमने क्या कहा था?”
मैं काँप गया।
“रिया…”
“तुमने कहा था… अगर कभी मैं मर गई… तो तुम भी जी नहीं पाओगे।”
मेरी आँखें भर आईं।
ये भी सच था।
ट्रंक वाली रिया चीखी—
“मत सुनो इसे! ये तुम्हारे दिमाग़ में रहती है!”
मैं टूट चुका था।
मैंने फैसला किया।
दरवाज़े की तरफ बढ़ा।
ट्रंक वाली ने मेरा पैर पकड़ लिया।
“नहीं!”
मैंने उसे झटका दिया।
दरवाज़ा खोला।
रिया अंदर आई।
लाल साड़ी।
वही मुस्कान।
वही चेहरा।
वही खुशबू।
वो मेरी तरफ आई… और धीरे से गले लग गई।
उसका शरीर बर्फ जैसा ठंडा था।
लेकिन मैं रो पड़ा।
“रिया…”
उसने कान में फुसफुसाया—
“तुम हमेशा गलत चुनते हो।”
अचानक पीछे ट्रंक के अंदर वाली रिया चीखने लगी।
उसका शरीर ऐंठने लगा।
जैसे कोई अदृश्य हाथ उसका गला दबा रहा हो।
मैं पलटा।
“नहीं!”
मैं भागकर उसके पास गया।
वो हवा के लिए तड़प रही थी।
गले पर लाल निशान उभर रहे थे।
“अभय… बचाओ…”
मैंने उसे खींचना चाहा।
पर कोई ताकत उसे अंदर दबा रही थी।
बाहर वाली रिया हँस रही थी।
धीरे-धीरे।

मीठे तरीके से।
“देखो... तुमने फिर मुझे चुना।”
मैंने पहली बार बाहर वाली के चेहरे को गौर से देखा।
उसकी मुस्कान बहुत चौड़ी हो चुकी थी।
आँखें पूरी काली।
गर्दन धीरे-धीरे उलटी दिशा में घूमने लगी।
हड्डियों की आवाज़ आई।
कड़क... कड़क...
उसके होंठ फटे।
अंदर दाँत नहीं...
काले कीड़े रेंग रहे थे।
मैं पीछे हट गया।
“तू कौन है?!”
वो बोली—
“मैं वही हूँ... जिसे तुमने बनाया।”
ट्रंक वाली रिया की आखिरी साँस निकल गई।
उसकी आँखें खुली रह गईं।
कमरा शांत हो गया।
मेरे हाथ खून से भर गए।
मैंने अपनी पत्नी को दूसरी बार मरते देखा।
इस बार... मेरी वजह से।
मैं पागलों की तरह चिल्लाया और उस चीज़ पर टूट पड़ा।
मैंने उसे धक्का दिया।
वो दीवार से टकराई।
लेकिन हँसती रही।
मैंने लोहे की रॉड उठाई और उसके चेहरे पर मारी।
पहला वार।
त्वचा फटी।
अंदर मांस नहीं था।
काली राख निकली।
दूसरा वार।
चेहरा टूट गया।
तीसरा वार—
वो गायब हो गई।
बस कमरे में उसकी हँसी गूँजती रही।
तभी मुख्य दरवाज़े पर जोर-जोर से दस्तक हुई।
धड़ धड़ धड़!
“पुलिस! दरवाज़ा खोलो!”
मैं भागकर बाहर आया।
घर की सारी लाइट जल चुकी थी।

स्टोर रूम बंद था।
जैसे कुछ हुआ ही नहीं।
मैंने दरवाज़ा खोला।
दो पुलिस वाले अंदर आए।
उनके पीछे शर्मा जी भी थे।
“क्या हुआ?” एक पुलिसवाले ने पूछा।
मैं हाँफते हुए बोला—
“मेरी पत्नी... स्टोर रूम... अंदर...”
उन्होंने स्टोर रूम खोला।
अंदर कुछ नहीं था।
ना ट्रंक।
ना लाश।
ना खून।
खाली कमरा।
“सर, ये आदमी नशे में है,” शर्मा जी बोले।
मैं चीखा—
“झूठ! वो यहीं थी!”
तभी पीछे से चाय के कपों की आवाज़ आई।
सबने मुड़कर देखा।
रिया किचन में खड़ी थी।
सामान्य।
सुंदर।
मुस्कुराती हुई।
“ऑफिसर... मेरे पति कुछ दिनों से सदमे में हैं।”
पुलिस वाला मेरी तरफ मुड़ा।
“ये आपकी पत्नी है?”
मैं काँप गया।
रिया ने मुस्कुराकर कहा—
“हाँ।”
मैंने पुलिस वालों की आँखों में देखा।
सब उसे इंसान देख रहे थे।
सिर्फ मैं उसका असली चेहरा जानता था।
उसने मुझे देखकर होंठ हिलाए—
“अब तुम्हारी बारी है।”
रात को पुलिस चली गई।
मैं बेड पर बंधा हुआ उठा।
हाथ-पैर रस्सी से जकड़े।
कमरा अंधेरा।
सामने कुर्सी पर रिया बैठी थी।
अब बिना नकाब।

काली आँखें।
फटी मुस्कान।
वो धीरे से बोली—
“कल सुबह अखबार में खबर छपेगी…”
“पति ने पत्नी को मारा… फिर खुद पागल हो गया।”
मैं तड़पने लगा।
“तू क्या चाहती है?!”
वो खड़ी हुई।
मेरे चेहरे के पास आई।
फुसफुसाई—
“मैं चाहती हूँ… तुम जिंदा रहो।”
“हर दिन।”
“और धीरे-धीरे टूटो।”

भाग 5 – पागलखाने में हर रात वो आती है
सुबह जब मेरी आँख खुली…
मैं घर में नहीं था।
मैं सफेद दीवारों वाले कमरे में था।
लोहे का बिस्तर।
हाथों में पट्टियाँ।
खिड़की पर मोटी सलाखें।
और दरवाज़े के बाहर किसी के रोने की आवाज़।
मैंने उठने की कोशिश की।
सिर फट रहा था।
गले में सूखापन।
तभी दरवाज़ा खुला।
दो वार्ड बॉय अंदर आए।
उनके पीछे एक डॉक्टर।
पतला, चश्मा लगाए, ठंडी आँखों वाला आदमी।
उसने फाइल खोली।
“कैसा महसूस कर रहे हो, अभय?”

“मैं कहाँ हूँ?”
“मानसिक पुनर्वास केंद्र।”
“नहीं... मुझे यहाँ क्यों लाए?”
डॉक्टर ने चश्मा ठीक किया।
“कल रात तुमने अपनी पत्नी पर हमला किया।”
मेरे सीने में कुछ टूट गया।
“झूठ!”
“पड़ोसी गवाह हैं।”
“वो इंसान नहीं है!”
डॉक्टर ने नोट लिखा।
“भ्रम अब भी जारी है।”
मैं चिल्लाया।
उन्होंने मुझे पकड़ लिया।
इंजेक्शन लगाया।
शरीर भारी होने लगा।
डॉक्टर जाते-जाते बोला—
“शाम को तुम्हारी पत्नी मिलने आएँगी।”
जब शाम हुई...
मैं आधा सुन्न था।
दरवाज़ा खुला।
रिया अंदर आई।
सफेद सूट में।
बाल बंधे हुए।
चेहरे पर चिंता।
जैसे एक बेचारी पत्नी अपने टूटे हुए पति से मिलने आई हो।
नर्स ने कुर्सी रखी।
रिया बैठ गई।
नर्स बाहर चली गई।
दरवाज़ा बंद।
रिया मुस्कुराई।
धीरे-धीरे।
वही चौड़ी मुस्कान।
वही काली आँखें।
“कैसा लग रहा है?” उसने पूछा।
मैं पीछे हट गया।
“दूर रहो!”
वो हँसी।
“सबको मैं अच्छी पत्नी लगती हूँ।”
“तू है क्या?”
वो झुकी।

मेरे कान में फुसफुसाई—
“तुम्हारे पाप का चेहरा।”
मैंने उसे धक्का देने की कोशिश की।
मेरे हाथ कमजोर थे।
वो आराम से बैठी रही।
“जानते हो सबसे अच्छा क्या है?”
“क्या?”
“अब तुम जहाँ भी जाओगे… मैं साथ रहूँगी।”
उस रात मैं सो नहीं पाया।
वार्ड में दस और मरीज थे।
कोई हँस रहा था।
कोई दीवार चाट रहा था।
कोई अपनी उँगलियाँ गिनते-गिनते रो रहा था।
रात के 3:00 बजे…
पूरे वार्ड की लाइट बंद हो गई।
सिर्फ गलियारे की लाल आपातकालीन लाइट जल रही थी।
फिर…
टक… टक… टक…
हील्स की आवाज़।
धीरे-धीरे मेरी तरफ आती हुई।
मैं बिस्तर पर सीधा बैठ गया।
आवाज़ मेरे बेड के सामने आकर रुक गई।
अँधेरे में रिया खड़ी थी।
लेकिन इस बार…
वो अकेली नहीं थी।
उसके पीछे दूसरी औरत खड़ी थी।
बाल बिखरे हुए।
चेहरा घायल।
होंठ फटे हुए।
आँखों में आँसू।
असली रिया।
मैं रो पड़ा।
“रिया…”
उसने होंठ हिलाए—
“भागो…”
नकली रिया ने उसका गला पकड़ लिया।
“चुप।”
असली रिया तड़पने लगी।
मैं बिस्तर से कूद पड़ा।
“छोड़ उसे!”

नकली रिया मेरी तरफ मुड़ी।
“तुम्हें अभी भी समझ नहीं आया?”
वो मुस्कुराई।
“ये मर चुकी है।”
फिर उसने असली रिया को मेरी तरफ फेंक दिया।
रिया मेरे पैरों में गिरी।
ठंडी।
कमज़ोर।
उसने काँपते हुए कहा—
“तहखाना…”
“घर का… नीचे…”
“वहाँ… तीसरा सच है…”
मैंने उसे उठाने की कोशिश की।
लेकिन वो धुएँ की तरह गायब हो गई।
पूरा वार्ड फिर रोशनी से भर गया।
बाकी मरीज सो रहे थे।
जैसे कुछ हुआ ही नहीं।
नकली रिया भी गायब।
सुबह मैंने डॉक्टर को सब बताया।
वो मुस्कुराया।
“प्रगति हो रही है।”
“क्या?”
“अब तुम दो-दो रिया देखने लगे हो।”
मैंने उसका कॉलर पकड़ लिया।
“मेरे घर का तहखाना कहाँ है?!”
डॉक्टर का चेहरा बदल गया।
पहली बार डर दिखा।
“तुम्हें ये किसने बताया?”
मैं जम गया।
“तुम जानते हो?”
वो तुरंत संभल गया।
“इसे बाँध दो।”
उस दिन मुझे एकांत कमरे में डाल दिया गया।
छोटा कमरा।
कोई खिड़की नहीं।
सिर्फ ऊपर कैमरा।
रात होते ही कैमरा अपने आप बंद हो गया।
और दीवार पर उँगली से लिखा उभरने लगा—
तहखाने में मैं अकेली नहीं थी।
मेरी सांस अटक गई।

फिर नीचे अगली लाइन उभरी—
जिसने मुझे मारा… वो तुम नहीं थे।
मैं पीछे हट गया।
“नहीं…”
तीसरी लाइन उभरी—

डॉक्टर से बचो। वही जानता है मैं कौन हूँ।

दरवाज़े के बाहर कदमों की आवाज़ आई।
चाबी घुमा कर कोई अंदर आ रहा था।
और मुझे यकीन था…
वो रिया नहीं थी।

भाग 6 – तहखाने का तीसरा सच
दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला।
कमरे में अँधेरा था।
मेरे हाथ अभी भी पीछे बंधे थे।
मैं दीवार से सटा खड़ा था।
चाबी घूमने की आवाज़ रुकी।
फिर कदम अंदर आए।
धीरे।
नपे-तुले।
मैंने सोचा—रिया।
लेकिन जो अंदर आया…
वो डॉक्टर था।
डॉ. समर चौधरी।
हाथ में टॉर्च।
चेहरे पर मुस्कान नहीं।
बस थकान।
उसने दरवाज़ा बंद किया।
कुंडी चढ़ाई।
फिर मेरी तरफ देखा।
“तुम्हें चुप रहना नहीं आता, अभय।”

मैं पीछे हट गया।
“तहखाने के बारे में तुम जानते हो।”
वो कुछ सेकंड चुप रहा।
फिर बोला—
“जानता हूँ।”
“रिया के बारे में?”
“बहुत कुछ।”
“तू कौन है?”
डॉक्टर धीरे-धीरे मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गया।
“वो सवाल तुमने बहुत देर से पूछा।”
उसने फाइल खोली।
अंदर पुरानी फोटो थीं।
उसने पहली फोटो मेरी तरफ बढ़ाई।
मेरे हाथ बंधे थे।
उसने खुद फोटो मेरे सामने पकड़ी।
मैं जम गया।
फोटो में रिया थी।
मेरी पत्नी।
लेकिन उसके साथ मैं नहीं था।
उसके साथ डॉ. समर था।
दोनों मुस्कुरा रहे थे।
बहुत करीब।
बहुत अपने जैसे।
मेरे अंदर आग भड़क गई।
“ये क्या है?!”
समर शांत रहा।
“रिया मुझे तुमसे पहले से जानती थी।”
“झूठ!”
“कॉलेज से।”
मेरी साँसें भारी हो गईं।
“वो मेरी थी…”
डॉक्टर हल्का हँसा।
“यही तुम्हारी सबसे बड़ी बीमारी है, अभय।
तुम इंसानों को चीज़ समझते हो।”
उसने दूसरी फोटो दिखाई।
रिया रो रही थी।
उसके गाल पर चोट का निशान था।
पीछे मैं खड़ा था।
नशे में।
चेहरा लाल।

मुझे वो रात याद नहीं थी।
या शायद... याद नहीं करना चाहता था।
“तुम उसे मारते थे,” समर बोला।
“नहीं...”
“तुम्हें याद नहीं क्योंकि दिमाग़ ने मिटा दिया।”
मेरे सिर में दर्द उठा।
फ्लैश।
रिया चीख रही थी।
मैं बोतल फेंक रहा था।
वो रो रही थी।
मैं चिल्ला रहा था—
“तू मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाएगी!”
मैं घुटनों पर गिर पड़ा।
“नहीं...”
समर ने तीसरी फोटो दिखाई।
घर का तहखाना।
रिया कुर्सी से बंधी हुई।
डरी हुई।
जिंदा।
मैं पीछे खड़ा था।
हाथ में रस्सी।
मेरे हाथ काँपने लगे।
“नहीं... ये मैं नहीं...”
समर झुका।
धीरे से बोला—
“ये तुम ही थे।”
मैंने पागलों की तरह सिर हिलाया।
“फिर वो एक्सीडेंट?”
समर की आँखें ठंडी हो गईं।
“एक्सीडेंट हुआ था।
लेकिन उस रात रिया नहीं मरी।”
“फिर?”
“तुम दोनों घर लौटे।
तुमने उसे तहखाने में बंद कर दिया... ताकि वो पुलिस को सच न बता सके।”
मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।
“मैंने... ऐसा नहीं...”
“किया था।”
मैंने गुस्से में पूछा—
“तो तुमने बचाया क्यों नहीं?!”
पहली बार समर का चेहरा टूटा।

“मैं पहुँचा था।”
“क्या?”
“उसने मुझे मैसेज किया था।”
उसने मोबाइल स्क्रीन दिखाई।
पुराना मैसेज।
“समर... जल्दी आओ. वो मुझे मार देगा.”
मेरे शरीर में करंट दौड़ गया।
“फिर?”
समर की आवाज़ भर्रा गई।
“जब मैं पहुँचा... वो मर चुकी थी।”
कमरे में सन्नाटा भर गया।
मैंने फुसफुसाया—
“रिया...”
समर ने आँखें बंद कीं।
“मैं उसे प्यार करता था।”
“तो नकली रिया कौन है?”
समर ने मेरी तरफ देखा।
“वो न रिया है... न भूत।”
“फिर?”
“वो अपराधबोध है।”
मैं हँस पड़ा।
पागलों की तरह।
“ये कैसा मज़ाक है?”
“कुछ जगहें दर्द सोख लेती हैं।
कुछ मौतें चेहरा बन जाती हैं।
तुम्हारे घर ने सब निगल लिया।”
तभी कमरे का तापमान गिर गया।
साँस से धुआँ निकलने लगा।
ऊपर का कैमरा फट गया।
लाइट झपकी।
और दरवाज़े पर तीन चोटें हुईं।
ठक।
ठक।
ठक।
समर जम गया।
“वो आ गई...”
दरवाज़ा अपने आप खुला।
रिया अंदर आई।
सफेद साड़ी में।
चेहरा शांत।

सुंदर।
लेकिन इस बार उसकी आँखें पूरी काली नहीं थीं।
एक आँख काली थी।
दूसरी में आँसू।
उसने मुझे देखा।
फिर समर को।
मुस्कुराई।
“तुम दोनों ने मुझे मारा।”
मैं काँप गया।
“मैंने...?”
उसने सिर टेढ़ा किया।
“उसने शरीर मारा...”
समर की तरफ देखा।
“और तुमने मुझे बचाया नहीं।”
समर चीखा—
“मैं देर से पहुँचा!”
रिया की गर्दन धीरे-धीरे उलटी घूमने लगी।
हड्डियाँ कड़कने लगीं।
“देर भी हत्या होती है।”
मैं रस्सियों से छूटने की कोशिश करने लगा।
रिया मेरी तरफ बढ़ी।
“अभय...”
“मैंने तुम्हें चाहा था...”
उसका चेहरा फटने लगा।
अंदर अँधेरा धुआँ।
“लेकिन अब मैं तुम्हें जीने नहीं दूँगी।”
समर ने जेब से चाकू निकाला और उस पर झपटा।
रिया ने बिना छुए उसका हाथ तोड़ दिया।
चीख।
फिर उसका सिर दीवार से दे मारा।
खून।
मैं चिल्लाया।
समर गिर पड़ा।
ज़िंदा... मगर टूटा हुआ।
रिया मेरी तरफ आई।
इतनी पास कि उसकी साँस बर्फ जैसी लगी।
“तुम्हें मौत नहीं दूँगी।”
“फिर क्या?”
वो मुस्कुराई।
“स्मृति।”

उसने मेरी आँखों पर हाथ रखा।
और अचानक सब याद आ गया।
हर थप्पड़।
हर चीख।
तहखाने में उसकी रोती आवाज़।
दरवाज़े पर मेरे कदम।
उसका मरना।
मेरी चुप्पी।
मेरा झूठा एक्सीडेंट।
मेरी नकली यादें।
मैं चीखता रहा।
जब आँख खुली...
मैं घर के तहखाने में था।
हाथ-पैर बंधे।
वही कुर्सी।
वही अँधेरा।
सामने दरवाज़ा बंद।
ऊपर से रिया की आवाज़ आई—
“अब सच में जीकर देखो...”
मैंने चीखा।
दरवाज़ा पीटा।
कोई जवाब नहीं।
फिर सामने अँधेरे कोने से आवाज़ आई।
एक औरत की धीमी साँसें।
मैं जड़ हो गया।
“क... कौन?”
अँधेरे से दूसरी आवाज़ आई।
मेरी अपनी।
“मैं वो अभय हूँ... जिसे तुमने बाहर भेजा था।”

भाग 7 – असली अभय कौन है?
तहखाने की बदबू मेरी नाक में घुस रही थी।
सीलन।
खून।

सड़ी लकड़ी।
और डर।
मैं कुर्सी से बँधा था।
हाथ सुन्न।
सिर दर्द से फटा जा रहा था।
अँधेरे कोने से वही आवाज़ दोबारा आई—
“मैं वो अभय हूँ... जिसे तुमने बाहर भेजा था।”
मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई।
“कौन है?! सामने आ!”
धीरे-धीरे अँधेरे से एक आदमी बाहर आया।
दाढ़ी बढ़ी हुई।
चेहरा कमजोर।
आँखें धँसी हुई।
कपड़े फटे हुए।
लेकिन चेहरा...
मेरा ही था।
मैंने चीख मार दी।
“नहीं...”
वो आदमी हँसा।
सूखी, टूटी हँसी।
“पहली बार खुद को देख रहे हो?”
“ये... ये कैसे...”
वो मेरे सामने आकर बैठ गया।
उसके पैरों में जंजीर थी।
“तेरा नाम अभय नहीं है।”
“चुप!”
“तेरा नाम आर्यन है।”
मेरे कानों में भनभनाहट शुरू हो गई।
“झूठ!”
“रिया ने तुझसे शादी नहीं की थी...”
वो झुककर बोला—
“रिया ने मुझसे शादी की थी।”
दुनिया घूमने लगी।
“नहीं...”
उसने दीवार पर उँगली से लिखे पुराने निशान दिखाए।
दिन गिने हुए थे।
हजारों लकीरें।
“मैं असली अभय हूँ,” उसने कहा।
“और तू...”
वो मुस्कुराया।

“तू वो आदमी है जिसे मैं घर लाया था।”
मेरी साँस रुक गई।
“मैं... कौन हूँ?”
उसने आँखें बंद कीं।
“तू मेरा दोस्त था। आर्यन। शराबी। हिंसक। टूटा हुआ।”
फ्लैश।
बार।
मैं किसी के साथ बैठा हूँ।
हँस रहा हूँ।
पी रहा हूँ।
वो आदमी... यही अभय है।
“उस रात तू नशे में घर आया,” असली अभय बोला।
“रिया अकेली थी।”
मेरा दिल थम गया।
“नहीं...”
“तूने उस पर हाथ उठाया।”
फ्लैश।
रिया चीख रही है।
मैं उसे पकड़ रहा हूँ।
अभय बाहर से दरवाज़ा पीट रहा है।
“दरवाज़ा खोल!”
मैं पागलों की तरह सिर हिलाने लगा।
“नहीं!”
“रिया ने तुझे धक्का दिया। तू सीढ़ियों से गिरा।”
फ्लैश।
अंधेरा।
खून।
चीख।
फिर कुछ नहीं।
“जब मुझे अंदर आने दिया गया...” अभय की आवाज़ टूट गई।
“रिया मर रही थी।”
मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।
“मैंने...?”
“हाँ।”
वो कुछ सेकंड चुप रहा।
“और मैं टूट गया।”
उसने आगे कहा—
“मैंने तुझे मरा समझा।
तेरी लाश तहखाने में फेंक दी।”
“लेकिन...”

“तू मरा नहीं था।”
मैं काँप उठा।
“फिर?”
“रिया मर गई।
मैं पागल हो गया।
मैंने तुझे नीचे बाँध दिया... और तेरी यादें तोड़ दीं।”
मेरी सांसें तेज़ हो गईं।
“कैसे?”
“दवाइयाँ। मारपीट। अंधेरा। महीनों तक।”
उसकी आँखें खाली थीं।
“फिर एक दिन तू जागा... और मैंने तुझे अपना नाम दे दिया।”
“अभय...”
“हाँ।”
“और तू?”
“मैं तहखाने में रह गया।”
मैंने उसे घूरा।
“तू पागल है।”
वो हँसा।
“हम दोनों हैं।”
ऊपर से कदमों की आवाज़ आई।
धीरे।
महिला के कदम।
टक... टक... टक...
दोनों चुप हो गए।
दरवाज़ा खुला।
रिया अंदर आई।
जैसी शादी के दिन थी।
सुंदर।
साफ़।
जिंदा।
मैं रो पड़ा।
“रिया...”
अभय भी रो पड़ा।
“रिया...”
वो हम दोनों को देखकर मुस्कुराई।
“देखो... मेरे दोनों पति।”
मैंने काँपते हुए कहा—
“तू... जिंदा है?”
वो हँसी।
“कभी मरी ही नहीं।”

अभय चीखा—
“झूठ! मैंने तुम्हें मरते देखा!”
रिया ने उसे देखा।
“तुमने चाहा था कि मैं मर जाऊँ।”
फिर मेरी तरफ मुड़ी।
“और तुमने चाहा था कि मैं सिर्फ तुम्हारी हो जाऊँ।”
मेरा दिमाग़ टूटने लगा।
“तो भूत?”
रिया मुस्कुराई।
“भूत नहीं।”
उसने जेब से दवाइयों की शीशी निकाली।
“मतिभ्रम।”
दूसरी शीशी।
“नींद की दवा।”
तीसरी।
“स्मृति बदलने वाली।”
मैं जड़ हो गया।
“तूने... ये सब किया?”
“हाँ।”
वो धीरे-धीरे नीचे उतरी।
“दो हिंसक मर्द।
एक ने मुझे मारना चाहा।
दूसरे ने बचाया नहीं।”
उसने दोनों हाथ फैलाए।
“मैंने तुम दोनों को सज़ा दी।”
अभय गरजा और उस पर झपटा।
रिया साइड हो गई।
अभय गिरा।
उसने लोहे की रॉड उठाई।
रिया ने मेरी तरफ देखा।
“अब फैसला करो।”
“क्या?”
“किसे मारोगे?”
मैं काँप रहा था।
मेरे सामने:
असली अभय।
रिया।
मेरी टूटी हुई पहचान।
मैंने रॉड उठाई।
अभय मेरी तरफ बढ़ा।

“वो झूठ बोल रही है!”
रिया मुस्कुराई।
“हमेशा की तरह।”
मैंने पूरी ताकत से वार किया—
रिया पर।
उसके सिर से खून निकला।
वो पीछे गिरी।
अभय जम गया।
मैं चीखा—
“बस!”
रिया जमीन पर पड़ी हँस रही थी।
खून बह रहा था।
“अच्छा... अब याद आया...”
उसने आखिरी साँसों में कहा—
“तुम दोनों... एक ही आदमी हो।”
मैं जम गया।
अभय मेरी तरफ देखने लगा।
उसका चेहरा काँपा।
फिर... धुँए की तरह टूटने लगा।
उसकी आँखें, चेहरा, शरीर—
सब गायब।
मैं अकेला खड़ा था।
तहखाने में।
दो कुर्सियाँ थीं।
एक खाली।
दूसरी पर जंजीरें।
दीवार पर मेरी ही लिखावट में हजारों लाइनें:
मैं अभय हूँ।
मैं आर्यन नहीं हूँ।
बार-बार।
बार-बार।
बार-बार।
मैं घुटनों पर गिर पड़ा।
रिया मर चुकी थी।
या शायद बेहोश।
मुझे नहीं पता।
मुझे सिर्फ इतना पता था—
मैं अकेला था।
हमेशा से।
तीन महीने बाद...

मानसिक अस्पताल।
कमरा नंबर 13।
मैं खिड़की के पास बैठा था।
नर्स ने पूछा—
“नाम?”
मैं मुस्कुराया।
“आज कौन सा चाहिए?”
रात 3 बजे…
दरवाज़े पर तीन दस्तक हुई।
ठक।
ठक।
ठक।
बाहर से रिया की आवाज़ आई—
“इस बार मैं सच में मर चुकी हूँ…”
## समाप्त… या शुरुआत?